

विषय सूची

भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें	०७
तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में	०९
तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है	१६
जो वास्तविक तौहीद रखेगा बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश पायेगा	२१
शिरक (मिश्रण) में डरने का विषय	२७
ला इलाहा इल्लल्लाह का आमंत्रण देने का विषय	३२
तौहीद (अद्वैत) तथा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का अर्थ	३८
आपत्ति के निवारण के लिए कड़ा तथा धागा आदि पहनना शिरक है	४४
यंत्रों तथा मंत्रों के विषय में	५०
जो पेड़ पत्थर आदि से शुभ प्राप्त करता हो	५५
अल्लाह के सिवाय किसी अन्य के लिए बलि देने के विषय में	६४
जिस स्थान में अल्लाह के सिवाय के लिए बलि दी जाये वहाँ	
अल्लाह के लिए बलि न दी जाये	७०
अल्लाह के सिवाय के लिए मनौती शिरक है	७४
अल्लाह के सिवाय से शरण चाहना शिरक है	७६
अल्लाह के सिवाय से गुहार करना या दुआ करना शिरक है	७८
अल्लाह का कथन "कि क्या वह उसे अल्लाह का साझी बनाते हैं जो कुछ	
बना ही नहीं सकते"	८३
अध्याय	८९
शफाअत (अभिस्तावना) का विषय	९४
अल्लाह का कथन "आप उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते जिसे चाहते हों"	१००
इस बात का वर्णन कि इंसानों के अधर्म तथा धर्म त्याग का कारण	

सदाचारियों के सम्बन्ध में अत्यधिक है	१०४
जब किसी धर्माचारी की समाधि के पास अल्लाह की इबादत घोर पाप है	
तो उसकी पूजा करना कितना बड़ा पाप होगा	११०
धर्माचारियों की समाधियों के सम्बन्ध में अति उसे अल्लाह के सिवाय पूज्य	
मूर्ति बना देती है	११७
मुस्तफा ﷺ ने तौहीद (अद्वैत) की चारदीवारी की रक्षा कैसे की तथा शिरक	
तक पहुँचने के मार्ग को कैसे बंद किया	१२०
इस उम्मत के कुछ लांग मूर्तियाँ पूजेंगे	१२३
जादू के विषय में	१३०
जादू के कुछ भेदों का वर्णन	१३४
काहिनाँ आदि के विषय में	१३८
जादू उतारने के विषय में	१४२
शुगुन लंने के विषय में	१४४
ज्योतिष का अध्याय	१४८
नक्षत्रों से वर्षा होने पर विश्वास	१५१
अध्याय	१५५
अध्याय	१५९
अध्याय	१६२
अध्याय	१६४
इस बात का वर्णन कि अल्लाह पर ईमान में भाग्य संतोष भी है	१६६
पाखण्ड (दिखावा) का वर्णन	१७०
इंसान का अपने पुण्यकर्म से दुनिया चाहना शिरक है	१७३
यह विषय कि जिस ने विद्वानों तथा प्रशासकों की आज्ञापालन वैध को निषेध	
तथा निषेध को वैध करने में की उसने उसको प्रभू बना दिया	१७६
अध्याय	१७९
जो अल्लाह के किसी नाम और विशेषणों का इंकार करता है	१८२
अध्याय	१८४
अध्याय	१८६

जो अल्लाह की कसम खाने पर संतुष्ट न हो.....	१९०
जो अल्लाह चाहे तथा जो तुम चाहो बोलने का विषय.....	१९२
जिसने युग को अपशब्द कहा उसने अल्लाह को पीड़ा दी.....	१९५
न्यायकारियों का न्यायकारी आदि नाम रखना.....	१९७
अल्लाह के नामों का आदर तथा उसके लिए नाम बदल देना.....	१९९
जो किसी ऐसी वस्तु का उपहास उड़ाये जिस में अल्लाह की, कुरआन की और रसूल की बात हो.....	२०१
अध्याय.....	२०३
अध्याय.....	२०९
अध्याय.....	२१२
अल्लाह पर सलाम कहने का निषेध.....	२१४
हे अल्लाह यदि तू चाहे तो क्षमा कर दे कहना.....	२१६
दास तथा दासी नहीं कहना चाहिए.....	२१८
जो अल्लाह के नाम पर मांगे उसे फेरा न जाये.....	२२०
अल्लाह को प्रसन्न करके स्वर्ग की मांग करनी चाहिए.....	२२२
"लौ" (यदि) के विषय में.....	२२३
वायु को गाली देने से निषेध.....	२२५
अध्याय.....	२२७
भाग्य के इंकार का विषय.....	२३०
चित्रकारों के विषय में.....	२३४
अधिक क्रसम (शपथ) खाने का विषय.....	२३७
अल्लाह तथा उस के नबी की जिम्मेदारी के विषय में.....	२४०
अल्लाह पर शपथ लेने का विषय.....	२४४
अल्लाह की सिफारिश किसी के पास न ले जानी चाहिए.....	२४६
नबी ﷺ का तौहीद की रक्षा करना तथा शिर्क के द्वार बंद करना.....	२४८
अध्याय.....	२५०

भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें

तौहीद के विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में किताबत तौहीद जैसी किताब इस्लाम में नहीं लिखी गई, यह किताब इस विषय की ओर आमन्त्रण देती है, इसलिए कि शैख -मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब رحمته الله ने इसमें तौहीद की तर्कों के सिद्धान्त, तौहीद का अर्थ और उसकी श्रेष्ठता बयान की है, उसके अतिरिक्त एकेश्वरवाद के विपरीत वस्तुओं और उनसे बचाव के कारणों का भी वर्णन है, इसी प्रकार संक्षिप्त रूप से तौहीद इबादत (केवल एक अकेले अल्लाह को पूजना) और अल्लाह के नामों एवं विशेषताओं में उसको अकेला समझने का भी बयान है, छोटे एवं बड़े शिर्क, उसकी रूप-रेखा, उसके कारणों एवं साधनों का भी वर्णन है।

तौहीद की सुरक्षा और उसके साधनों एवं उसके कुछ भेदों का भी विवरण दे दिया है, चूंकि यह एक महान पुस्तक है इसलिए उसे पढ़ने, याद करने और उसके पाठों में विचार करके उसका सम्मान करना चाहिए, इस प्रकार आप जहाँ कहीं रहेंगे उसकी आवश्यकता आप को रहेगी।

किताबत तौहीद

तौहीद से अभिप्राय किसी वस्तु को इकट्ठा करना है "وَحْدَ الْمُسْلِمُونَ اللَّه" का अर्थ है : "मुसलमानों ने अल्लाह तआला को एक अकेला पूज्य माना।"

अल्लाह तआला की किताब में तौहीद से अभिप्राय उसके निम्नलिखित तीन प्रकार है:

१. तौहीद रुबूबियत (अल्लाह अकेला प्रभु है)
२. तौहीद उलूहियत (अल्लाह अकेला पूज्य है)
३. तौहीद अस्मा व सिफात (अल्लाह अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है, उस जैसा कोई नहीं)

तौहीद रुबूबियत: उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला को उसके कार्यों में एक और अकेला मानना, अल्लाह के कार्य बहुत हैं, उन में कुछ यह है: पैदा करना, जीविका देना, जीवन एवं मृत्यु देना। इन सभी चीजों में वह पूर्णरूप से एक और अकेला है।

तौहीद उलूहियत: उसका अर्थ यह है कि वह पूज्य जिसकी प्रेम और सम्मान के साथ पूजा की जाये, अर्थात् सेवकों के कार्यों को केवल अल्लाह तआला के लिए विशेष करना।

तौहीद अस्मा व सिफात: उसका अर्थ यह है कि बन्दा यह विश्वास रखे कि अल्लाह तआला अपने नामों एवं विशेषताओं से अकेला है, उन नामों और विशेषताओं से कोई उसके समान नहीं।

लेखक رحمۃ اللہ علیہ ने इस किताब में तौहीद के उपरोक्त तीनों भेदों का वर्णन किया है और उन भेदों में बन्दों को जिस भेद की अधिक आवश्यकता है, चूँकि उस में ज्यादा किताबें नहीं पाई जाती इसलिए उस को विस्तारपूर्वक बयान किया है, वह तौहीद इबादत अथवा तौहीद उलूहियत है, अतः उसके स्तम्भ जैसे भरोसा, डर और प्रेम आदि की व्याख्या की है और इसके विपरीत जो शिर्क है उसको भी बयान किया है। शिर्क यह है कि अल्लाह के एकेश्वरवाद होने उसके अकेले पूज्य होने, या उसके नामों एवं विशेषताओं से उसके साथ अन्य को साझी बनाया जाये, इस किताब के लिखने का उद्देश्य भी यही है कि इबादत से अल्लाह तआला के साथ किसी को साझी मानने से रोकना और केवल उसी की इबादत का आदेश देना।

कुरआन व हदीस से प्रमाणित तर्क इस बात को बतलाते हैं कि शिर्क दो प्रकार के हैं: १. बड़ा २. छोटा और एक एतवार से उसके तीन प्रकार हैं: १. बड़ा शिर्क २. छोटा शिर्क ३. छिपा शिर्क

बड़ा शिर्क : वह है जिसके करने से बन्दा धर्म से निष्कासित हो जाता है, उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के साथ अन्य की भी पूजा की जाये अथवा इबादत में से कुछ अल्लाह के अतिरिक्त की ओर फेर दिया जाये, अथवा इबादत में अल्लाह तआला के साथ किसी को उसका साझी माना जाये।

छोटा शिर्क : वह है जिस पर धर्मशास्त्र ने शिर्क का आदेश लगाया है, परन्तु उसमें किसी को पूर्ण साझीदार नहीं माना जाता जो उसको बड़े शिर्क के साथ मिला दे।

यह स्पष्ट रहे कि बड़ा शिर्क प्रत्यक्ष भी है जैसे मूर्तियों, मजारों, मृतकों के पूजकों का शिर्क, और अप्रत्यक्ष भी, जैसे मुनाफिकों का शिर्क, या विद्वानों, मृतकों और झूठे पूज्यों पर भरोसा करने वालों का शिर्क। यह शिर्क छिपा है और छिपी स्थिति में यह बड़ा है, जाहिर से नहीं। इसके अतिरिक्त कड़े, धागे और यन्त्र आदि पहनना, अल्लाह के अन्य की सौगन्ध खाना भी छोटे शिर्क में सम्मिलित है।

छिपा शिर्क: इससे तात्पर्य छोटे प्रकार के दिखावे और इसी तरह की अन्य त्रुटियाँ हैं।

तौहीद (एकेश्वरवाद के विषय में)

अल्लाह का कथन है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِعِبَادُونَ﴾

और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को मात्र अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया।^१ (सूरतुज-ज़ारियात: ५६)

तथा उसका कहना है कि:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

निश्चय हम ने प्रत्येक समुदाय में दूत भेजा कि अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और अवैज्ञाकारी से बचो।^२ (सूरतुन-नहल: ३६)

तथा उसका कहना है :

^१ मैंने मानव और जिन्नों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया। असलाफ़ (सहाबा, तावईन आदि) ने ﴿يَتَّبِعُونَ﴾ की व्याख्या ﴿الْبُحْدُونَ﴾ से की है, अर्थात् मैंने जिन्नो और इंसानों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरे एकेश्वरवाद का इकरार और प्रसार करें।

इस से यह भी ज्ञात हुआ कि प्रत्येक ईशदूत "तौहीद इबादत" को समझाने के लिए भेजे गये थे।

^२ यह आयत इबादत (उपासना) और तौहीद (एकेश्वरवाद) के अर्थ का विवरण है, इस से यह भी मालूम हुआ कि सारे रसूल और अम्बिया उपरोक्त दो बातों की शिक्षा के लिए भेजे गये, प्रथम अल्लाह की उपासना करो, द्वितीय तागूत (झूठे पूज्य) की उपासना से दूर रहो, इसी का तौहीद कहते हैं। इस आयत के प्रथम भाग ﴿اعْبُدُوا اللَّهَ﴾ में तौहीद का इकरार और दूसरे भाग ﴿وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ में शिर्क (बहुदेववाद) का इन्कार है।

﴿وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا﴾

तेरे पालनहार ने निर्णय कर दिया है कि मात्र उसी की इबादत (उपासना) करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरतुल इसा: २३)

अल्लाह का कथन है :

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ أَن تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

कह दो, आओ मैं तुम्हें वह पढ़कर सुना दूँ जिसे तुम्हारे पालनहार ने हARAM कर दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को साझी न बनाओ। (सूरतुल अनआम: १५१)

तथा उसका कथन है कि:

﴿وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

और अल्लाह की इबादत (वंदना) करो और उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो।^१ (सूरतुल निसा: ३६)

इब्ने मसऊद ने कहा:

जो मुहम्मद ﷺ की उस वसीयत को देखना चाहे जिस पर आप की मुहर लगी है वह अल्लाह तआला का वचन पढ़े।

^१ इस आयत में फैसला से तात्पर्य आदेश और वसीयत है, अर्थात् उसने तुम्हें इस बात का आदेश दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी की इबादत न करो, कलमये तौहीद (الله لا اله الا الله) का भी यही अर्थ है, यह आम तौहीद के अर्थ को पूरी तरह प्रकट कर रही है।

^२ यह आयत इस बात को सिद्ध करती है कि प्रत्येक प्रकार का शिर्क (बहुदेववाद) वर्जित है चाहे वह बड़ा हो, छोटा हो या छिपा हुआ हो, इससे यह भी ज्ञात हुआ कि किसी फरिश्ता, नबी, नेक बन्दा, पत्थर, वृक्ष जिन्न आदि को अल्लाह तआला के साथ साझीदार बनाना उचित नहीं है।

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ أَن تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

﴿وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا﴾

कह दो आओ मैं तुम्हारे सामने वह बात पढ़कर सुनाऊँ जिससे तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हARAM कर दिया है: कि अल्लाह के साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरतुल अनआम: १५१)

उसके इस वचन तक :

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السَّبِيلَ﴾

तथा निश्चय यही मेरा सीधा मार्ग है। तो तुम उसका अनुसरण करो अन्य मार्गों पर न चलो।^१ (सूरतुल अनआम: १५३)

और मुआज्ज बिन जबल ने कहा:

«كُنْتُ رَدِيفَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى حِمَارٍ فَقَالَ لِي: يَا مُعَاذُ، أَتَذَرِي مَا حَقُّ اللَّهِ عَلَى الْعِبَادِ وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللَّهِ؟ قُلْتُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ حَقُّ اللَّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا.

^१ यहाँ वसीयत से तात्पर्य शास्त्रिक वसीयत है, अल्लाह तआला की वसीयत का अर्थ यह होता है कि वह आदेश अनिवार्य और आवश्यक है, यह आयत उपरोक्त आयतों की भाँति तौहीद के अर्थ को बतलाती है।

इब्ने मसऊद के कथन का मतलब यह है कि यदि मान लिया जाये कि रसूल ﷺ ने कोई वसीयत लिख कर उस पर अपनी मुहर लगाई जिसे आप के देहान्त के पश्चात् खोला गया तो आप की वसीयत यही आयतें होंगी जिनमें यह बातें लिखी हैं।

इब्ने मसऊद की यह हदीस उन आयतों की सर्वश्रेष्ठता और उच्चता को बतलाती है जिनका आरम्भ शिर्क के इन्कार से हुआ है। इससे यह सिद्ध हुआ कि तौहीद का इन्कार और शिर्क का इन्कार सर्वप्रथम और सब से श्रेष्ठ है।

हैं, जिनका आरम्भ अल्लाह ने अपने इस कथन से किया है : अल्लाह के साथ दूसरे को पूज्य न बनाओ कि अधिकार और तिरष्कार के पात्र बन जाओ तथा अंत इस कथन पर किया है कि अल्लाह के साथ दूसरे को पूज्य न बनाओ अन्यथा निन्दित तथा अपमानित करके नरक में झोंक दिये जाओगे ।

तथा पवित्र अल्लाह ने इन विषयों की प्रधानता पर अपने इस कथन से हमें सावधान किया है : यही वह हिक्मत (तत्त्व-दर्शिता) की बातें हैं जो अल्लाह ने तेरी ओर प्रकाशना की हैं ।

११- सूरह निसा की वह आयत जिसका नाम 'दस हुक्क' (दायित्वों) वाली आयत रखा गया है, आरम्भ अल्लाह ने अपने इस कथन से किया है "अर्थात् अल्लाह की इबादत करो तथा उसदके साथ किसी को शरीक न करो ।"

१२- निधन के समय रसूलुल्लाह ﷺ की वसीयत का वर्णन ।

१३- बंदों पर अल्लाह के हक्क का परिचय ।

१४- बंदों के लिए अल्लाह का हक्क क्या है जब कि वे उसका हक्क अदा करें ।

१५- इस बात को बहुत से सहाबा नहीं जानते थे ।

१६- ज्ञान छिपाने का औचित्य किसी अच्छाई के लिए ।

१७- मुसलमानों को ऐसे इल्म की शुभ सूचना देना जिससे वह प्रसन्न हों ।

१८- अल्लाह की असीम दया पर भरोसा कर लेने से भय ।

१९- जिससे ऐसी चीज का प्रश्न किया जाये जिसे वह न जानता हो उसे कहना चाहिए कि अल्लाह तथा उसके रसूल बेहतर जानते हैं ।

२०- विशेष व्यक्ति को कोई खास बात बताना उचित है ।

२१- नबी ﷺ की विनम्रता कि आप गधे पर सवार हुए तथा अपने पीछे दूसरे को सवार किया ।

२२- अपने पीछे दूसरे को सवारी के जानवर पर सवार करने का औचित्य ।

२३- मुआज बिन जबल की श्रेष्ठता ।

२४- तौहीद के विषय की महत्ता ।

तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ﴾

जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान का घोलमेल शिर्क (बहुदेववाद) से नहीं किया¹ उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सत्य मार्ग पर है।² (सूरतुल अनआम: ८२)

¹ अर्थात् जो भक्त तौहीद के विषय में जितना पक्का और मजबूत होगा वह तदानुसार स्वर्ग में प्रवेश का अधिकारी होगा, उसके कर्म चाहे जैसे हों, इसीलिए इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब ने सूरह अन्आम की उपरोक्त आयत का विवरण किया है।

² अत्याचार का अर्थ : इस आयत में जुल्म (अत्याचार) से तात्पर्य शिर्क है, जैसाकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद र.अ. ने बयान किया है कि नबी स.अ. के सहचरों (सहाबा) ने इस आयत को अपने लिए बहुत बड़ा बोझ और कठिन समझा तो उन्होंने कहा : हे अल्लाह के रसूल ! हम में से कौन है जिसने स्वयं पर अत्याचार न किया हो ? आप ने फरमाया, उसका अर्थ वह नहीं जो तुम समझते हो, बल्कि यहाँ "जुल्म" से तात्पर्य शिर्क है। (सहीह बुखारी हदीस ४७७६) क्या तुम ने अल्लाह के नेक बन्दे (हजरत लुकमान) का यह कथन नहीं सुना :

﴿إِنَّ الشُّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"शिर्क बहुत बड़ा जुल्म (अत्याचार) है।" (सूरह लुकमान: १३)

इसलिए जुल्म से तात्पर्य शिर्क के आधार पर आयत का अनुवाद यह हुआ कि :

उबादह बिन सामित ने कहा कि रसूलुल्लाह स.अ. ने फरमाया:

«مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ: أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ عَلَىٰ مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ».

[जो इकरार कर ले कि एक अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, तथा यह कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं और यह कि ईसा अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं और उसका आदेश है जिसे उसने मरियम की ओर डाला तथा उसकी रूह है। स्वर्ग सत्य है एवं नरक सत्य है। (अल्लाह) उसे स्वर्ग में प्रवेश देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी हों।¹ (बुखारी तथा मुस्लिम)]

बुखारी तथा मुस्लिम में इतबान की हदीस में है कि :

«إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَّبِعِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللَّهِ».

[जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए, ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, अल्लाह ने उसे नरक पर हराम (वर्जित) कर दिया।²]

जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने अपने ईमान (विश्वास) को शिर्क से लतपत नहीं किया, उनके लिए (अल्लाह के यहाँ परलोक में) शान्ति है और वही लोग सीधे मार्ग पर है।

अतः जो व्यक्ति ईमान लाया अर्थात् तौहीद को अपनाया, और उस तौहीद को शिर्क से नहीं भिलाया, उसके लिए पूर्ण मार्गदर्शन है।

¹ अर्थात् वह व्यक्ति कर्मानुसार कितना ही हीन क्यों न हो, और उसके कर्मपत्र में कितने पाप क्यों न हों अल्लाह अन्त में उसे स्वर्ग में अवश्य प्रवेश करेगा, यह तौहीद वालों के लिए तौहीद के लाभों में से एक लाभ है।

² यही वाक्य "ला इलाहा इल्लल्लाह" तौहीद का सूत्र है, इस सूत्र को अल्लाह तआला